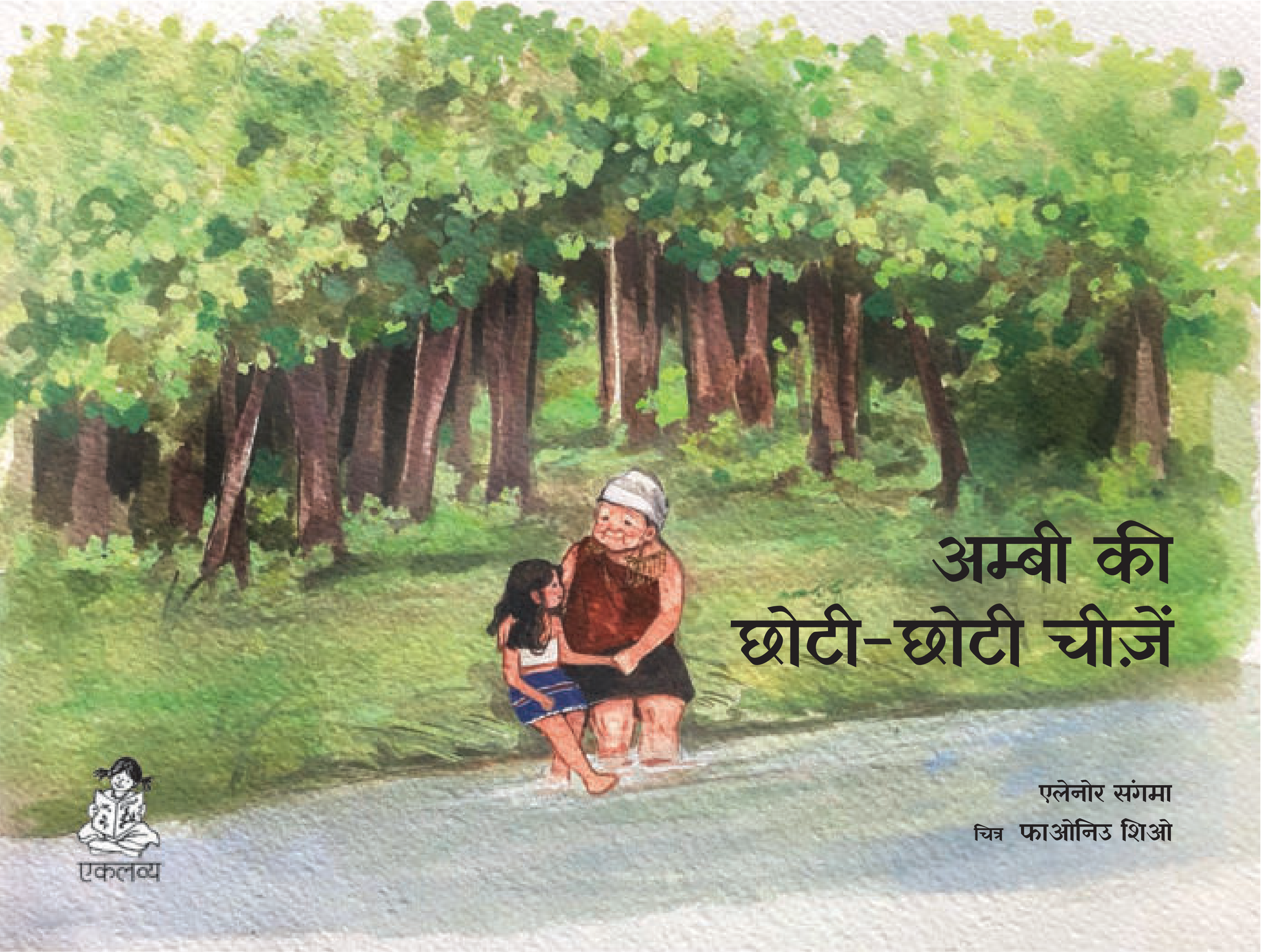

अम्बी की छोटी-छोटी चीज़ें

एलेनोर संगमा

चित्र फाओनिउ शिओ

एकलव्य

अम्बी की छोटी-छोटी चीज़ें

कहानी: एलेनोर संगमा
चित्र: फाओनिउ शिओ
अँग्रेज़ी से अनुवाद: नीतू यादव

एकलव्य

कल रात *अम्बी* नहीं रहीं। वह बहुत दिनों से बीमार थीं।
चिमिक जानती है कि अलविदा कहने का वक्त आ गया है।
वह अम्बी का हाथ कसकर पकड़ लेती है।

चिमिक को कमरे से बाहर
ले जाते हुए एई बड़े प्यार से
उसे समझाती हैं, "कोई बात
नहीं। आखिरकार, अब उन्हें हर
तकलीफ से छुटकारा मिल गया।"

चिमिक हामी भरती है, पर वह
अपने आँसू रोक नहीं पाती।

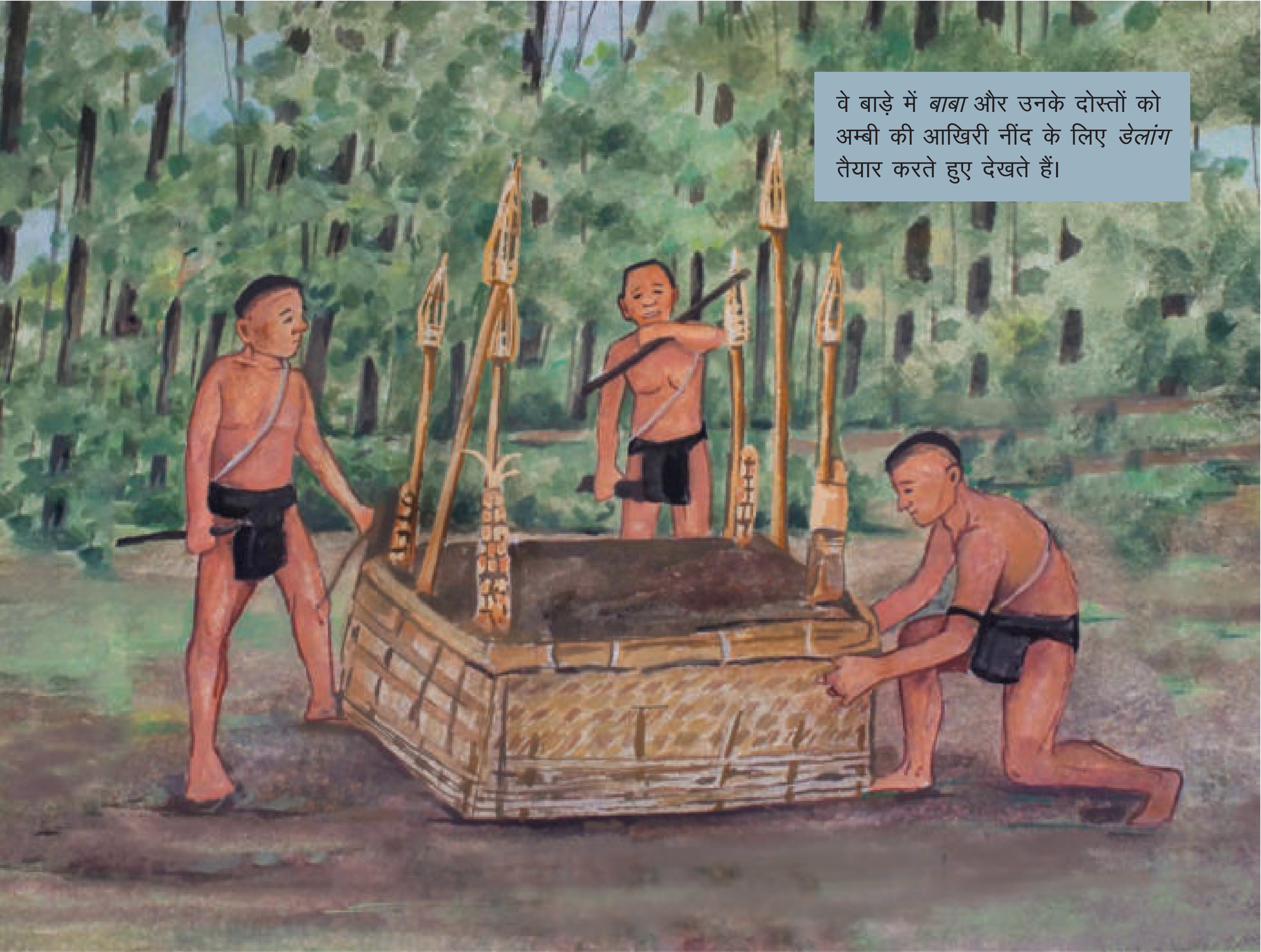

वे बाड़े में *बाबा* और उनके दोस्तों को अम्बी की आखिरी नींद के लिए *डेलांग* तैयार करते हुए देखते हैं।

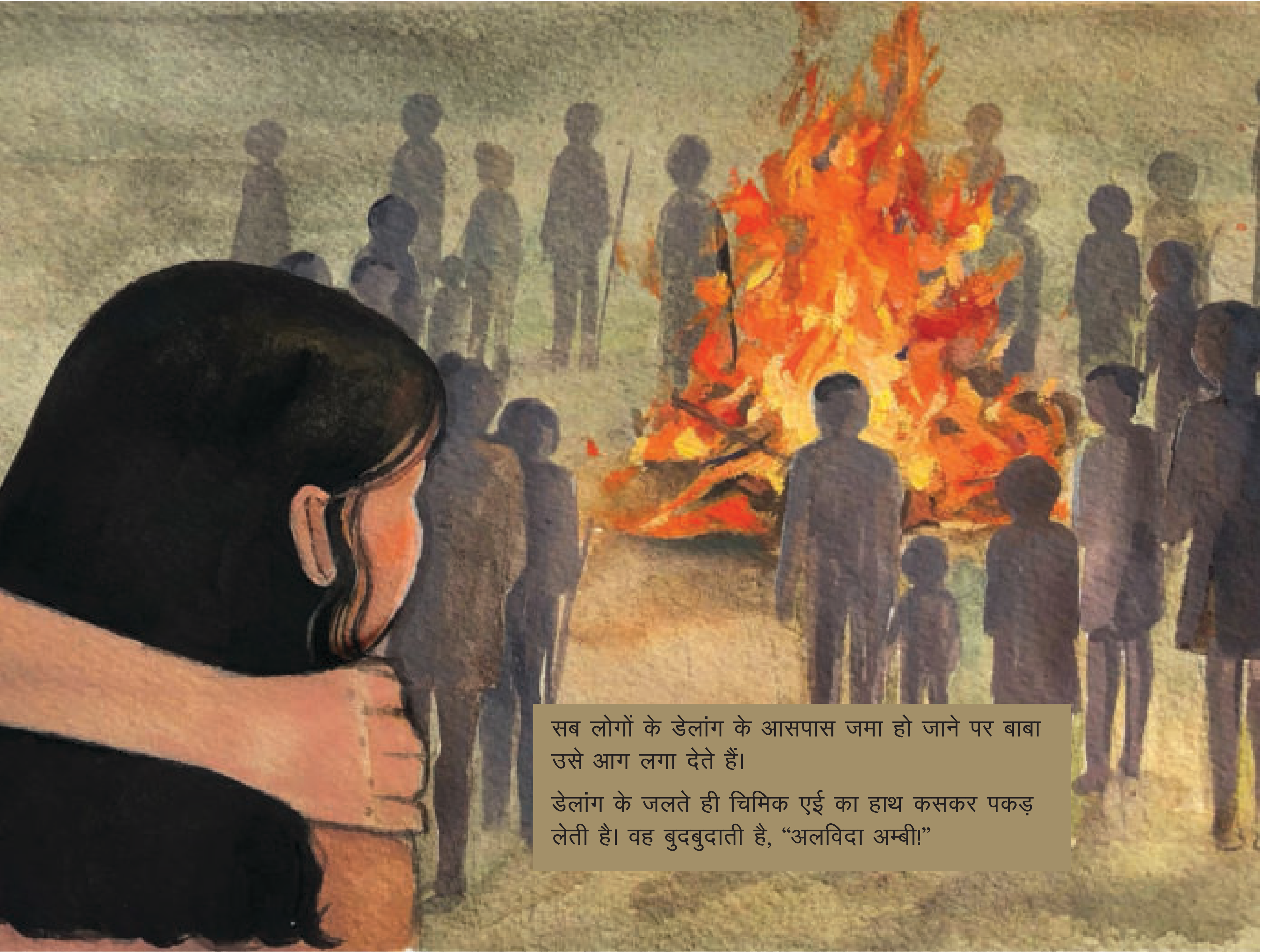

सब लोगों के डेलांग के आसपास जमा हो जाने पर बाबा उसे आग लगा देते हैं।

डेलांग के जलते ही चिमिक एई का हाथ कसकर पकड़ लेती है। वह बुदबुदाती है, “अलविदा अम्बी!”

बंगसी की धुन धीरे-धीरे हवा में गूँजने लगती है।

ऐसे लग रहा है जैसे पूरा गाँव अम्बी को अलविदा कहने आया है।

दामा की थाप के साथ लोग नाच-गा रहे हैं।

दामा और बंगसी की बढ़ती आवाज़ों के साथ चिमिक का मन उलझन से भर जाता है।

“ऐसे समय में सब इतने खुश क्यों हैं?”

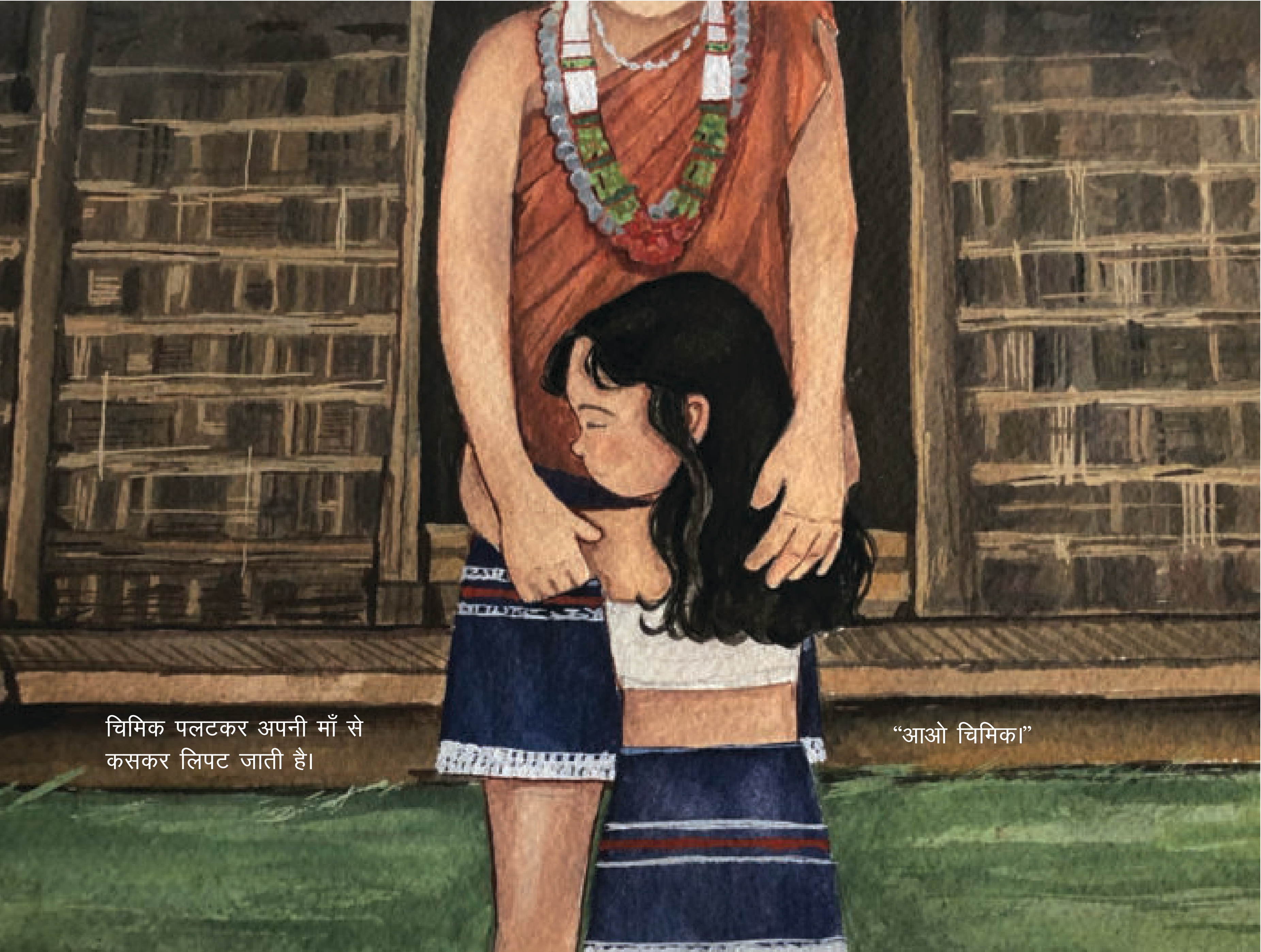

चिमिक पलटकर अपनी माँ से
कसकर लिपट जाती है।

“आओ चिमिक।”

एई उसे डेलांग से दूर ले जाती हैं।

दूर चल रहे अनुष्ठान की आवाज़ें
मन्द पड़ने लगती हैं।

दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं। एई चिमिक से पूछती हैं, “अब ठीक लग रहा है?”

“थोड़ा-सा।” अपने आँसू पोंछते हुए चिमिक धीरे से बोलती है।

एई धीरे से उसके सिर पर हाथ फेरती हैं और लकड़ी का एक बक्सा निकालती हैं।

एई उसे खोलते हुए कहती हैं, “देखो, मुझे क्या मिला!”

चिमिक उत्सुकता से बक्से के अन्दर देखती है।

“अम्बी की छोटी-छोटी चीज़ें!”

“अम्बी ये चूड़ियाँ रोज़ पहनती थीं!”

“ये बुन्दे *अच्चू* ने उन्हें तोहफे में दिए थे!”

चिमिक एक कपड़ा खोलती है। कपड़े में रखे कटे हुए नाखूनों को देखकर वह हैरान हो जाती है।

“ये अम्बी के नाखून हैं?”

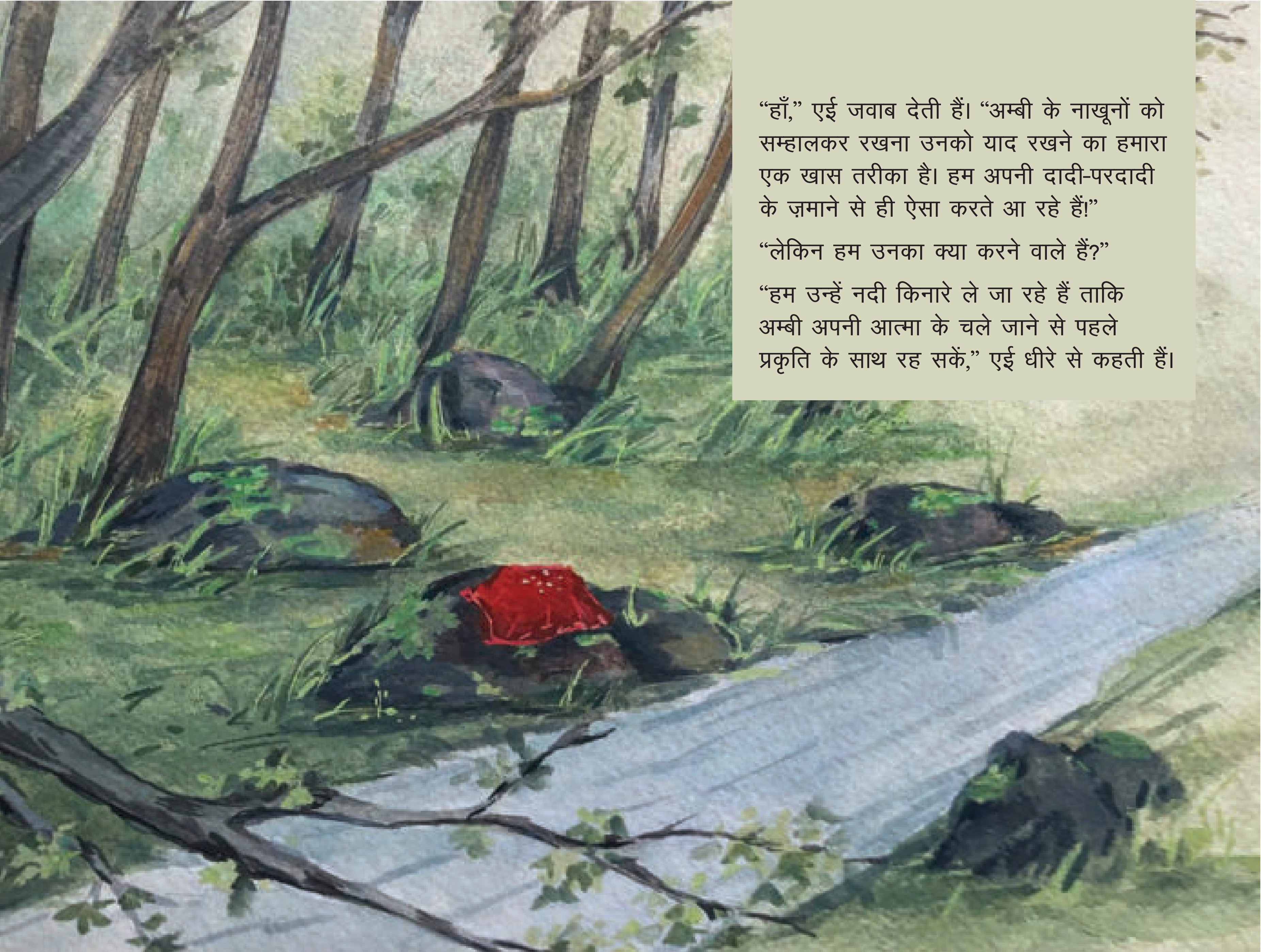

“हाँ,” एई जवाब देती हैं। “अम्बी के नाखूनों को सम्हालकर रखना उनको याद रखने का हमारा एक खास तरीका है। हम अपनी दादी-परदादी के ज़माने से ही ऐसा करते आ रहे हैं!”

“लेकिन हम उनका क्या करने वाले हैं?”

“हम उन्हें नदी किनारे ले जा रहे हैं ताकि अम्बी अपनी आत्मा के चले जाने से पहले प्रकृति के साथ रह सकें,” एई धीरे से कहती हैं।

“बाकी सब हम रख रहे हैं, है ना?”

“बिलकुल। अम्बी की छोटी-छोटी चीज़ें हमें उनकी यादों को सहेजने में मदद करेंगी।”

“लेकिन मैं उनको नहीं भूलने वाली!”

“हाँ, चिमिक। लेकिन अब जब हम उन्हें देख नहीं सकते या गले नहीं लगा सकते, तो अम्बी की ये छोटी-छोटी चीज़ें हमें एहसास दिलाएँगी कि वे हमारे करीब हैं।”

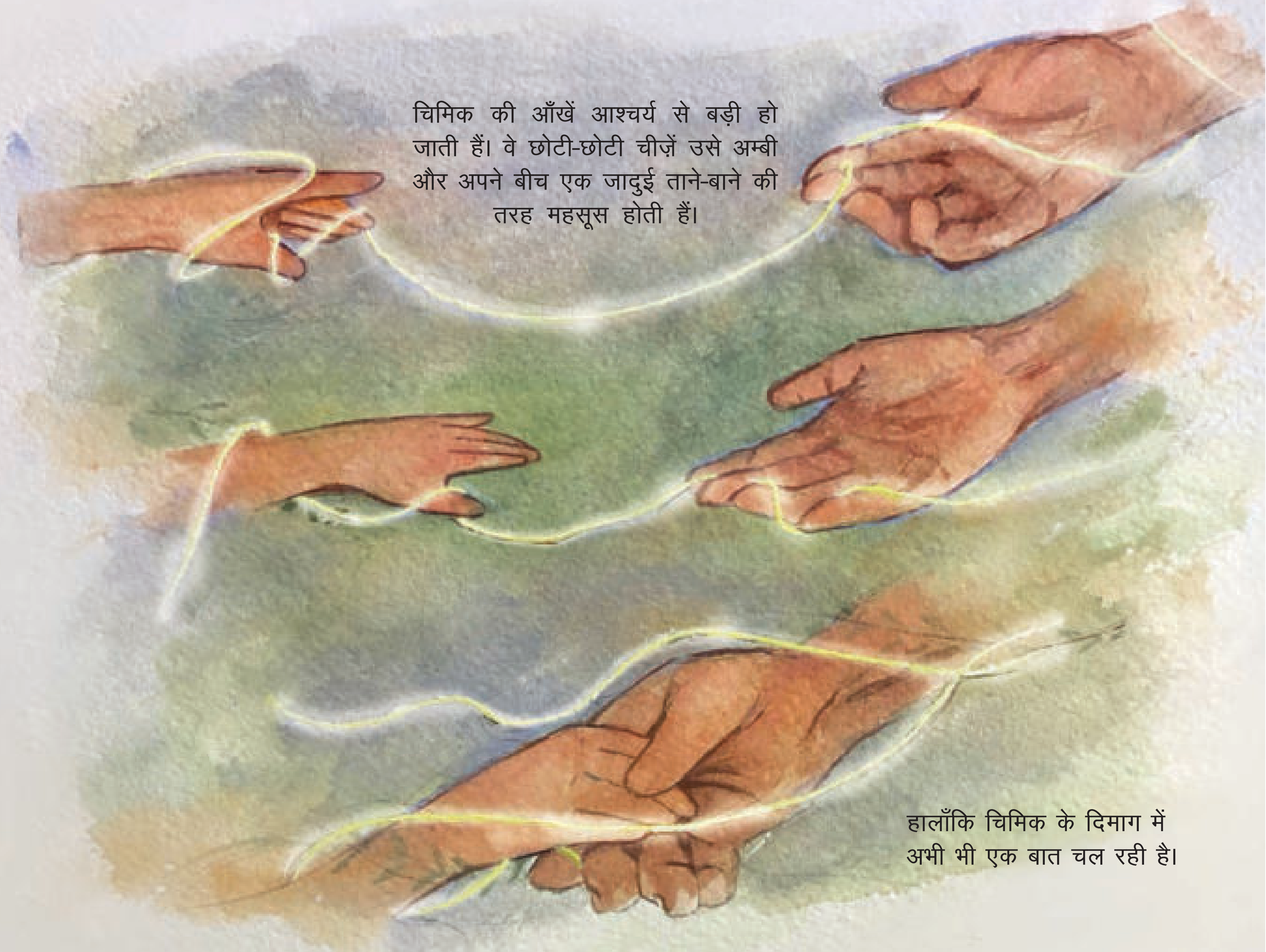

चिमिक की आँखें आश्चर्य से बड़ी हो जाती हैं। वे छोटी-छोटी चीज़ें उसे अम्बी और अपने बीच एक जादुई ताने-बाने की तरह महसूस होती हैं।

हालाँकि चिमिक के दिमाग में अभी भी एक बात चल रही है।

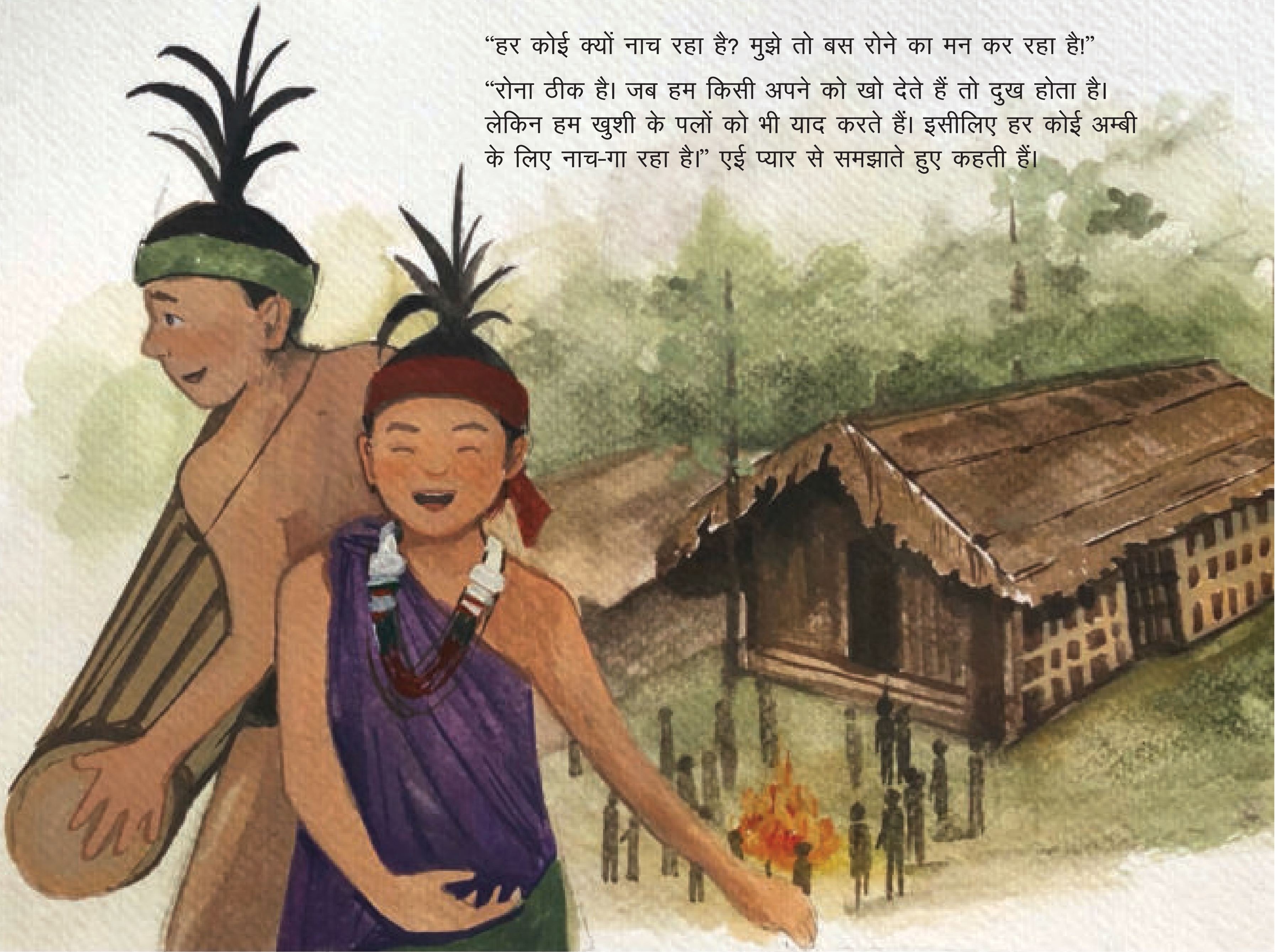

“हर कोई क्यों नाच रहा है? मुझे तो बस रोने का मन कर रहा है!”

“रोना ठीक है। जब हम किसी अपने को खो देते हैं तो दुख होता है। लेकिन हम खुशी के पलों को भी याद करते हैं। इसीलिए हर कोई अम्बी के लिए नाच-गा रहा है।” एई प्यार से समझाते हुए कहती हैं।

“यानी अम्बी को याद करते हुए मैं दुखी और खुश दोनों हो सकती हूँ?” वह पूछती है।

“बेशक, तुम उनको जैसे चाहो वैसे याद कर सकती हो,” एई कहती हैं।

आखिरकार चिमिक मुस्कराती है, और उन छोटी-छोटी चीज़ों में अम्बी को महसूस करती है।

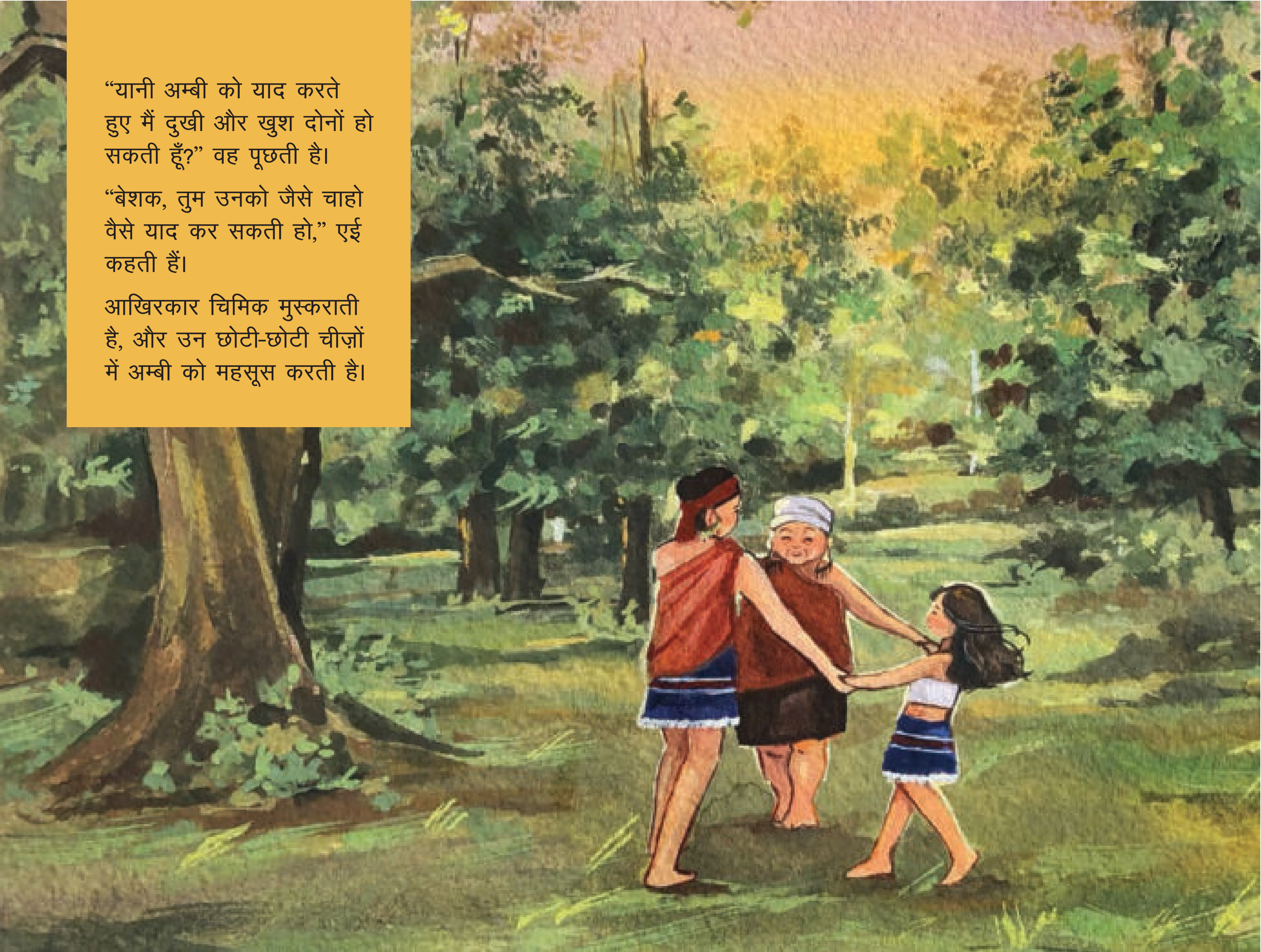

कहानी में आए गारो शब्द

अम्बी: दादी

एई: माँ

बाबा: पिता

डेलांग: अन्तिम संस्कार के लिए बनाई गई लकड़ी की वेदी

बंगसी: लकड़ी से बनी पारम्परिक गारो बंसी

दामा: पारम्परिक गारो ढोल

अच्चू: दादा

कहानी के बारे में

अम्बी की छोटी-छोटी चीज़ें एक विशेष परम्परा पर आधारित कहानी है। इस परम्परा के तहत जब किसी की मौत हो जाती है, तो उनके नाखूनों को बहुत ही प्यार से काटकर, मुलायम कपड़े में लपेटकर या फिर एक डिब्बे में रखकर नदी किनारे ले जाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह रिवाज मरने वाले की आत्मा को खुश करता है और उन्हें चिर निद्रा तक पहुँचने में मदद करता है।

यह काल्पनिक कहानी मेघालय के गारो हिल्स के एमांग्रे गाँव में प्रचलित एक परम्परा पर आधारित है। इस लगभग भूली हुई परम्परा को बताने के लिए देज़िलबर्थ आर मारक का खास शुक्रिया!

अम्बी की छोटी-छोटी चीज़ें

AMBI KI CHHOTI-CHHOTI CHEEZEIN

कहानी: एलेनोर संगमा
चित्र: फाओनिउ शिओ
डिज़ाइन: कनक शशि
अँग्रेज़ी से अनुवाद: नीतू यादव
सम्पादन: सीमा

हिन्दी टेक्स्ट: एकलव्य फाउंडेशन, नवम्बर 2025

यह किताब क्रिएटिव कॉमन्स के Attribution-Non-Commercial-NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) लाइसेंस के अन्तर्गत है जिसका पूरा विवरण http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd पर उपलब्ध है।

इस किताब का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक उद्देश्यों हेतु बिना बदलाव के मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक, चित्रकार और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए प्रकाशक से अवश्य सम्पर्क करें।

सौरमण्डला द्वारा विकसित

पहला संस्करण: नवम्बर 2025 (3000 प्रतियाँ)
कागज़ 100 gsm मैट आर्ट व 220 gsm एफबीबी (कवर)
ISBN: 978-93-48176-11-0
मूल्य: ₹ 60.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
वेबसाइट: www.eklavya.in; ईमेल: books@eklavya.in

मुद्रक: आदर्श प्रा लि, भोपाल; फोन: +91 755 255 5442

एलेनोर संगमा एक उभरती हुई लेखक हैं जो हमेशा से ही दिल से कहानीकार रही हैं। अनुवादित साहित्य के प्रति गहरा प्रेम होने से, वह अक्सर दुनिया भर से विविध आवाज़ों की तलाश में रहती हैं। फिर भी, उनका असली मकसद अभी भी वही है: गारो हिल्स की अनकही कहानियों को उजागर करना और दुनिया के साथ साझा करना।

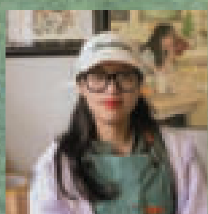

फाओनिउ शिओ नागालैंड की एक चित्रकार हैं। उन्हें जीवन और उसके निरन्तर बदलते परिवेश से सबसे ज़्यादा प्रेरणा मिलती है, जिसमें प्रकृति उनकी प्राथमिक प्रेरणा है। उनके कलात्मक सफर में जीवन के तत्वों को कैद करना, उन्हें प्रेरणा में ढालना और कला के एक जुनूनी प्रेमी के रूप में उन्हें अपनी कला में रूपान्तरित करना शामिल है।

सौरमंडला फाउंडेशन एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो अपने सहयोगी उपक्रम ‘सेंटर फॉर एक्सीलरेटेड डेवलपमेंट (CFAD)’ के ज़रिए दूरस्थ, जोखिमग्रस्त और वंचित समुदायों में लचीलापन विकसित करने के उद्देश्य से सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को तेज़ी से आगे बढ़ाने की कोशिश करता है।

यह कहानी है मेघालय के गारो हिल्स के एक छोटे से गाँव एमांग्रे की।

गारो जब किसी अपने को खो देते हैं, तो वे साथ मिलकर नाच-गाकर, ज़िन्दगी का जश्न मनाकर उस प्रियजन को अलविदा कहते हैं।

आइए, चिमिक और उसकी एई के प्यार, हँसी और आँसुओं से भरे, दिल को छू लेने वाले इस सफर में उनके साथ शामिल हो जाएँ!

एकलव्य

मूल्य: ₹ 60.00

9 789348 176110

SAURA MANDALA
Centre for Accelerated Development